1 Constitutional Values and Democratic Institutions - Rashtriya Sadbhavana Yatra, Uttarakhand

Report by Bhuwan Pathak

1.1 यात्रा का सन्दर्भ एवं उद्देश्य

समाज में बढ़ते हुए भेदभाव, द्वेष, घृणा, यहां तक कि परस्पर अमानवीय व्यवहार का सामना करने के लिए कुछ सामाजिक विचारकों एवं जन कार्यकर्ताओं द्वारा देश की आजादी के 75वें साल के मौके पर एक राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा की परिकल्पना की गई। इसकी शुरुआत देवभूमि उत्तराखंड से मई महीने में की गई।

उत्तराखंड में ऐतिहासिक कुली बेगार प्रथा के 100वें वर्ष के मौके पर उत्तराखंड के विभिन्न सामाजिक सस्थानों, लोकतांत्रिक संगठनों, जन आंदोलन समूहों, नागरिक सगठनों और बौद्धिक संस्थाओं द्वारा एक साथ जुड़ कर इस प्रदेश व्यापी यात्रा का आयोजन किया गया।

यात्रा के संचालन एवं प्रबंधन सम्बंधी निर्णयों के लिए एक प्रदेश स्तरीय कमेटी का गठन किया गया। विभिन्न संगठनों, लोक समूहों एवं सामाजिक संस्थानों ने यात्रा संबंधी जिम्मेदारियां ली।

सात सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पूरी यात्रा में शामिल रहने का निर्णय लिया। यह सात हैं सर्वश्री इस्लाम हुसैन, भुवन पाठक, बसंती बहन, साहिब सिंह सजवाल, गोपाल राम, सुन्दर बरोलिया, एवं प्रयाग भट्ट एवं बासंती बहन। इनके अलावा, हर पड़ाव पर बहुत सारे साथी एक से सात दिन तक यात्रा के साथ जुड़े।

यह यात्रा उत्तराखंड की जनता के साथ पर्यावरणीय, लोकतांत्रिक, सामाजिक सौहार्द्र, आजीविका, एवं पलायन जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर लोक संवाद स्थापित करने की कोशिश है। यात्रा के दौरान विगत 100 सालों के सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक एवं लोकपक्षीय राजनीति के स्थानीय नायकों के जीवन एवं उनके योगदान को भावी पीढ़ी के साथ साझा करने का प्रयास किया गया।

स्थानीय विकास एवं समाज सुधार के उत्तम प्रयासों को श्रद्धा पूर्वक याद किया गया। साथ ही साथ, युवाओं की आकांक्षाओं एवं शंकाओं के बारे में उनसे संवाद किया गया। अंतरराष्ट्रीय, देशीय, एवं स्थानीय समस्याओं के कारणों एवं परस्पर संबंधों के बारे में समझ बढ़ाई गई।

सद्भावना यात्रा 8 मई से उत्तराखंड के हल्द्वानी नगर से आरंभ हुई। नगरों, कस्बों, एवं गांवों में पैदल तथा इनके बीच बजाज टेम्पो ट्रैवलर मिनीबस द्वारा यह यात्रा कुल चालीस दिन में यह पूरे प्रदेश के हर कोने को छुई तथा पांच दिन उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में अलग अलग स्थानों पर पहुंची द्य इस यात्रा का समापन समारोह देहरादून में 20 –21 जून 2022 को हुआ जिसमे राज्य भर से लगभग १०० सामाजिक कार्यकर्ता जुड़े।

1.2 यात्रा के स्थानों की सूची

हल्द्वानी से सुरू होकर 45 दिनों में, 4500 किलोमीटर से अधिक यात्रा, 200 से अधिक सद्भावना सभाओं एव कार्यक्र्मों में लगभग 10,000 लोगों ने भाग लिया एवं उनसे संवाद किया गया।

क्रम	यात्रा स्थल	क्रम	यात्रा स्थल	क्रम	यात्रा स्थल
1	हल्द्वानी	28	चोरा	55	बूढा केदार
2	दिनेशपुर	29	कपकोट भराडी	56	विनक खाल
3	रामनगर	30	बागेश्वर	57	उत्तरकाशी
4	नैनीताल	31	कौसानी अनाशक्ति आश्रम	58	टिहरी बांध क्षेत्र
5	मल्ला रामगढ़	32	कौसानी लक्ष्मी आश्रम	59	नई टिहरी
6	तल्ला रामगढ़	33	चनौदा	60	चम्बा
7	नथुवाखान	34	अल्मोड़ा	61	जौल गांव
8	छतोला	35	कठपुडिया	62	खाड़ी
9	सतखोल	36	द्वारसौं	63	गैड गांव जौनपूर
10	मुक्तेश्वर	37	मजखली	64	गरखेत
11	भटेलिया बाजार	38	रानीखेत	65	नौगांव
12	जैंती	39	द्वाराहाट	66	चकराता
13	कांडे गांव	40	गैरसैंण	67	कालसी
14	दाड्मी गांव	41	नांगनुलाखाल	68	विकासनगर
15	दन्या लक्ष्मी आश्रम	42	चिंतोली	69	रामपुर
16	दन्या बाजार	43	खंडुआ	70	कोटद्वार
17	पिथौरागढ़	44	देघाट	71	लैंसडोन
18	हुडेती गांव	45	सल्ट खुमाड़	72	सतपुली
19	अस्कोट	46	देवालय सल्ट	73	पोखाल
20	जोलजीवी	47	थलीसैंण	74	वीसी (द्वावाटीखाल)
21	मुन्स्यारी	48	पौडी गढ़वाल	75	विनक
22	नाचनी	49	श्रीनगर	76	अठूरवाला
23	मुवानी पीपलतड	50	सिल्यारा आश्रम (बालगंगा घाटी)	77	कोटी
24	बागाड़ नाघर आश्रम	51	बेलेसवर धाम	78	डाईवाला
25	हिमदर्शन कुटी	52	लस्याल गांव	79	दूधली
26	गौंखुरी	53	विनकखाल	80	**देहराद्वन (यात्रा समापन)**
27	रीमा	54	खवाडा गांव		

यात्रा की योजना–प्रेरणा के लिए राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली का आभार। जिन जिन साथियों ने आवास, भोजन व बैठकों का आयोजन किया, उनको धन्यवाद।

हल्द्वानी से उत्तराखंड सद्भावना यात्रा शुरू

हल्द्वानी, संवाददाता। हल्द्वानी से उत्तराखंड सद्भावना यात्रा शुरू हो चुकी है। रविवार को रामपुर रोड स्थित रेस्टोरेंट में हुई गोष्ठी के बाद यात्रा को हरी झंडी दिखाकर दिनेशपुर के लिए रवाना किया गया। उत्तराखंड में सामाजिक धार्मिक एकता व समन्वय के लिए यह 40 दिवसीय सद्भावना यात्रा आयोजित की जा रही है।

कुली बेगार प्रथा के 100वें एवं देश की आजादी के 75वें साल के मौके पर आयोजित यात्रा में विभिन्न सामाजिक संस्थान, लोकतांत्रिक संगठन, जन आंदोलन समूह, नागरिक संगठन और बौद्धिक संस्थान सहयोगी हैं। पत्रकार

हल्द्वानी से रविवार को उत्तराखंड सद्भावना यात्रा को दिनेशपुर के लिए रवाना किया गया।

स्वर्गीय कुंवर प्रसून के जन्मदिन पर उनकी स्मृति में यह यात्रा शुरू की गई है। गोष्ठी में उत्तराखंड आचार्य कुल के अध्यक्ष विजय शंकर शुक्ला, राज्य आंदोलनकारी पीसी तिवारी, इस्लाम हुसैन, हुकुम सिंह कुंवर, कैलाश पाण्डेय, अरण्य रंजन, बलवंत बोरा, आनन्द रावत, राजीव गांधी फाउंडेशन के अध्यक्ष विजय महाजन, बहादुर सिंह जग्गी, प्रभात ध्यानी आदि रहे।

वैचारिक रूप से यात्रा की योजना बनाने में सहायता के लिए पद्मश्री इतिहासकार डॉ शेखर पाठक, राजीव लोचन साह, पीसी तिवारी, सुरेश भाई, डॉक्टर रमेश पंत, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, दर्शना जोशी, सुंदर सिंह मेहरा, लक्ष्मण आर्य व राजीव गांधी फाउंडेशन के विजय महाजन व वरिष्ठ सद्भावना फेलो विजय प्रताप का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

यात्रा दल का नेतृत्व उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, रीता इस्लाम, गोपाल भाई, सर्वोदय कार्यकर्ता साहब सिंह सजवान, सुंदर सिंह बरोलिया, विजय महाजन, प्रो सोमनाथ घोष, परमानंद भट्ट, जीत सिंह सनवाल, लक्ष्मी सनवाल, प्रयाग भट्ट, रजनीश बिष्ट, रेवा बिष्ट, हिदायत आजमी, मुरारी गोस्वामी, दिनेश लाल, नरेंद्र कुमार, प्रेम बहुखंडी, पीसी तिवारी, किरण आर्य, अमीनुल रहमान, प्रभात उप्रेती, दिनेश कुंजवाल, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, डॉक्टर रमेश पंत, सुंदर सिंह मेहरा आदि शामिल रहे।

जिन प्रमुख साथियों ने यात्रा पड़ावों पर सहयोग किया उनमें सर्व श्री डॉक्टर अजय पुंडीर, नैन सिंह डगवाल, रूपेश कुमार, प्रभात ध्यानी, मनमोहन अग्रवाल, राजीव लोचन साह, शेखर पाठक, अनिरुद्ध जडेजा, स्वाति मवाली, रमा बिष्ट, बचे सिंह बिष्ट, दिनेश कुंजवाल, अनिला पंत, चंद्रा पंत, महेश पुनेठा, महेंद्र रावत, भगवान रावत, राजेश उप्रेती, रेनू ठाकुर, जगत मतोलिया, नरेश द्विवेदी, अनिल कार्ले, कमलदीप रावत।

1.3 सदभावना यात्रा रिपोर्ट

सदभावना भाईचारा के संदेश के साथ राष्ट्रीय सदभावना यात्रा 8 मई 2022 को हल्द्वानी से प्रारंभ हुई। 8 मई कुंवर प्रसून जी की जयंती होती है। हल्द्वानी से शुरू होकर 20 जून 2022 को यात्रा का समापन देहरादून में हुआ, इस बीच यात्रा में लगभग 4500 किलोमीटर की सड़कें नापी 40 राते उत्तराखंड के अलग–अलग स्थानों पर बिताई, लगभग 200 से अधिक बैठके, नुक्कड़ सभाएं, संस्कृतिक रैलियों, जनसभाओं द्वारा लोगों से संवाद स्थापित करने का प्रयास किया गया।यात्रा की शुरुआत संदेश यात्रा के तौर पर हुई, लेकिन धीरे–धीरे यह यात्रा शोध व अध्ययन यात्रा में बदल गई, जैसे–जैसे हम आगे बढ़ते गए हमारे सामने उत्तराखंडी जनजीवन के नए अध्याय खुलते चले गए।

कुली बेगार प्रथा के विरुद्ध आंदोलन के 100 वर्ष पूरे होने व आजादी के 75वें साल में अपने लोकनायकों को हम याद करते रहे। पिछले 100 सालों में पहले राष्ट्रीय आंदोलन फिर आजाद भारत के निर्माण में जिन लोकनायकओ ने अपना जीवन खपा दिया उनके कार्यक्षेत्र व जन्मभूमि से भी यह यात्रा गुजरी, कुली बेगार आंदोलन की भूमि बागेश्वर जहाँ गांधी जी का आना एक महत्वपूर्ण घटना साबित हुईद्य उनके आने के बाद राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा रचनात्मक आंदोलन व कार्यों की निरंतरता आज भी उत्तराखंड के अलग–अलग हिस्सों में दिखाई देती है।

1970–80 के दशक तक विभिन्न सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक आंदोलनों तथा कामों में अग्रणीय दिखाई देने वाला गांधीवादी आंदोलन अब कमजोर दिखाई देने लगा है। खादी ग्रामोद्योग का काम करने वाली रचनात्मक संस्थाएं भी नई बाजार व्यवस्था का शिकार हुई है। इसके बावजूद सर्वोदय व भूदान आंदोलन में भागीदारी करने वाली पीढ़ियां तथा उनकी स्मृति अभी शेष है, लोग उन दिनों तथा तब के माहौल को भावुकता से याद करते मिलेद्य 1950 और 60 के दशक की बालिका शिक्षा तथा महिला सशक्तिकरण के काम में लगीद्य महिला समाज कर्मियों से मिलना अभूतपूर्व थाद्य विमला बहुगुणा, शशी प्रभा रावत, शोभा बहन, दिशा बहन व राधा दीदी से मिलना, बात करना अविस्मरणीय रहेगा। खाड़ी में स्वर्गीय दुलारी बहन से मिलना तो वरदान जैसा था क्योंकि हमारी मुलाकात के आठवें दिन उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

इसी भांति चिपको आंदोलन के विभिन्न साथियों व कार्यकर्ताओं की यात्रा मे बढ़–चढ़कर भागीदारी ने यात्रा को जीवंत बनाया। विभिन्न पर्यावरणीय आंदोलन तथा कार्यों का प्रभाव तथा जानकारी एकदम हासिये मैं दिखाई दी। 'नशा नहीं रोजगार दो' आंदोलन, कनकटा बैल, 70 व 80 के दशक का छात्र आंदोलन धीरे–धीरे राजनीतिक शोरगुल में भुलाया जाने लगा है। अस्कोट–आराकोट यात्रा को याद करने वाले लोगों से मुलाकात हुई। आधुनिक विकास के प्रति लालायित समाज प्रकृति व पर्यावरणीय नुकसान को लेकर चुप्पी साधे हैं। टिहरी के पराभव ने आधुनिक विकास के जीत की घोषणा कर दी है। पर्यावरणीय सवालों का आधुनिक मुहावरा हमारे वनवासी समाज की मूल अवधारणाओं तथा भाषा से मेल नहीं खाता दिखा।

पहाड़ों में विशालकाय होटल निर्माण, जमीनों की खरीद–फरोख्त लगातार बढ़ रही है। स्थानीय समाज इस सवाल पर दो हिस्सों में बटा दिखता है। सख्त भू–कानून की मांग भी सबसे ज्यादा इन्हीं इलाकों से आ रही है। प्राकृतिक संसाधनों को लेकर संघर्ष भी यहां तीखा होता जा रहा है। यह कमोबेश पूरे उत्तराखंड में सबसे बेहतर आबोहवा वाली ऊंची जगह पर दिखाई दे रहा है।

पूरे पहाड़ में लगातार कूड़े के पहाड़ खड़े होते जा रहे हैं। प्लास्टिक कचरा उत्तराखंड के हर कोने तक पहुंच रहा है, लगातार बढ़ता जा रहा है, गांव के रास्तों के साथ–साथ कचरा भी चलता रहता है, हर नगर–निगम, नगर–पालिका व नगर–पंचायत में सुंदर गीत गाते हुए कचरा गाड़ी चलती रहती है, लेकिन कचरे का ढेर बिल्कुल शहर के नजदीक बढ़ता जा रहा है। इस कचरे से निपटने में सरकारे, नगर– निकाय व समाज विफल दिखता है।

उत्तराखंड में लगातार नए कस्बे बढ़ते व फैलते जा रहे हैं।पिछले दो–तीन दशकों में सैकड़ों नए कस्बे तेजी से फले फूले हैं। यहां नई बाजार नीति, स्कूल, बैंक सुविधाएं, बारातघर, निजी अस्पताल खुले हैं गांव में रहने वाली बड़ी आबादी गांव से यहां स्थापित हो गई है। इन कस्बों का अनियोजित निर्माण व अशुरक्षित भविष्य के लिए खतरा है। 2–3 दसको पहले तक पहाड़ों का उत्पादक मानव श्रम कस्बों व शहरों में आकर लगातार अनउत्पादक श्रम में तब्दील हो रहा है।

पहाड़ के गांव में होने वाला लघु–निर्माण (सार्वजनिक निर्माण) जैसे पंचायतघर, यात्री विश्राम गृह, सार्वजनिक शौचालय, पटवारी चौकी, एनम सेंटर, प्राथमिक विद्यालय, लघु नैहरे, व पुल बहुत ही घटिया स्तर के निर्माण सामग्री से बनाए जा रहे हैं। इन में व्याप्त भ्रष्टाचार पर ना हो तो चर्चा हो रही है ना इसका विरोध हो रहा है इस भ्रष्टाचार में संलिप्त लोग सब हमारे आसपास के लोग हैं। एक आश्चर्यजनक चुप्पी इस भ्रष्टाचार को लेकर हमें दिखती है।

राज्य निर्माण के 22 साल पूरे होने के पश्चात भी सार्वजनिक सुविधाओं की आपूर्ति या बहाली बहुत निराशाजनक है, लोग यह कहते मिलते हैं कि इससे बेहतर तो उत्तर प्रदेश में थे, सरकारी विभागों की लापरवाही चरम पर है। कृषि विभाग व उद्यान विभाग जिसकी नीतियां लागू कर रही हैं उससे हमारी परंपरागत कृषि व उद्यान को जबरदस्त नुकसान पहुंच रहा है। लगातार बढ़ता बंजर, सरकती नदियां, नाले, घोर, जलते जंगल फैलता चीड़ भी हमारी पर्यावरणीय महामारी की ओर इशारा कर रहा है। लगभग सभी इलाकों में लोगों की स्वीकारोक्ति है कि पेयजल व सिंचाई योजनाओं ने हमारी छोटी नदियों, गधरो व तालों को लगभग समाप्त कर दिया है। नदियों में मिलने वाली मछलियां तथा अन्य जलीय जीव लगातार घटते जा रहे हैं।

इन सब निराशाओ के साथ–साथ बेरोजगारी व पलायन हमारी समस्त संभावनाओं के द्वारा बंद कर दे रहे हैं। जिन युवाओं को पहाड़ के जैसे श्रमकारी जीवन व सरल व सुगम बनाना था वो युवा रोजगार खासकर नौकरियों के लिए पहाड़ से लगातार मैदानों या महानगरों की ओर जा रहे हैं।

धार्मिक व जातिगत भेदभाव भी खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है। जिन गॉवो व लोगों ने किसी अन्य धार्मिक समूह को देखा तक नहीं है, वह भी टेलीविजन व फोन से अपनी राय बना रहे हैं। जातिगत भेदभाव शहरों बाजारों व कस्बों में कम हुआ है, छुआछूत घटा है, लेकिन गांव में भेदभाव जस का तस बना हुआ है। कई बार हिंसक तक हो जा रहा है।

इन सब निराशाओं के बावजूद कई आशा जनक बातें भी इस यात्रा के दौरान देखने को मिली, पहाड़ की महिलाएं स्वयं सहायता समूह के माध्यम से संगठित हो रहे हैं। रोजगार के नई पहल कर रहे हैं, युवाओं ने कम निवेश में किए जा सकने वाले कारोबार शुरू किए हैं। बालिका शिक्षा बेहतर दिखाई देती है, सरकारी स्कूल उनके शिक्षक नवाचार व रचनात्मकता के साथ लगातार बेहतर होते जा रहे, सरकारी स्कूलों में छात्र संख्या भी लगातार बढ़ रही है।

इन तमाम और ढेर सारे अन्य अनुभवों संवादों के साथ यहां यात्रा समाप्त हुई। 20–21 जून को देहरादून में विभिन्न जन संगठनों, संस्थाओं, आंदोलन समूहों ने मिलकर आगे के कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की।

यात्रा के दौरान चर्चा किए गये मुख्य बिन्दु:

सामाजिक मुद्दे	आर्थिक मुद्दे	पर्यावरणीय मुद्दे
धार्मिक एवं जातीय दुर्भावना का फैलाव	स्थानीय अर्थव्यवस्था का कमजोर होना	जल, जंगल, जमीन के उपर स्थानीय लोगों का अधिकार नही रहा
लोक चेतना जागरण का अभाव	आर्थिक विषमता में बढाव	ग्लेसियर, नदियां, धारे, नौले सब सूख रहे हैं
उच्च शिक्षा के अवसरों में बृधि परन्तु में गुणवत्ता में गिरावट	आजिविका के अभाव के कारण बेरोजगारी	बांधों और विकास परियोजनाओं के कारण, नदियों का प्रवाह न्यूनतम हो गया
युवाओं के लिये व्यवसायिक प्रशिक्षण का अभाव	महंगाई के कारण कमजोर वर्गो में अधिक भार	वन पंचायत प्रणाली होने के बावजूद स्थानीय लोगों को लाभ नही
स्वास्थ्य एवं सफाई – चिकित्सा एवं नागर स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी	कृषि उत्पादन एवं लाभ की कमी	जलवायु परिवर्तन के कारण भीषण गर्मी, सर्दी एवं वर्षा
पुरुषों में शराब की लत	उत्पादित माल के लिये बाजार की कमी	प्राकृतिक आपदा – भूस्खलन, अचानक बाढ़
महिलाओं के उपर घरेलू काम का बोझ एवं आर्थिक चुनौतियां बढी हैं	आय के स्थानीय श्रोतों की कमी	भूकंप आवृति एवं तीव्रता बढी है
पलायन एवं विस्थापन	सरकारी योजनांए – नरेगा इत्यादि से सीमित लाभ	प्लास्टिक कचरे की बढोत्तरी
आपसी संवाद और सामुहिक कार्यों की परंपरा में गिरावट	स्थानीय संसाधनों का दोहन परन्तु स्थानीय लाभ नही	अनियंत्रित पर्यटन के कारण, प्राकृतिक सौन्दर्य का ह्रास

यात्रा के दौरान, हमने उन तमाम जन नायकों/लोक नायकों को इस महत्वपूर्ण अवसर पर स्मरण किया जिन्होंने पछले 100 वर्षों के दौरान विविध भाषाई, भोगोलिक, सांस्कृतिक परंपराओं, रीति रिवाजों व मान्यताओं वाले समाज को एकजुट किया। इसके अलावा जिन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनों व उसके पश्चयात अपना जीवन समाज की बेहतरी के लिये न्योछावर किया। यात्रा के दौरान अलग–अलग स्थानों में लगभग 800 सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, व्यवसायिक एंव बुद्दिजीवी संगठनों के सांथियों ने कार्यक्रम के आयोजन में अत्यधिक सहयोग दिया, उनके प्रति आभार।

I.4 २० जून २०२२ – सदभावना यात्रा समापन गोष्ठी, प्रैस क्लब, देहरादून

प्रातः 10 बजे सद्भावना यात्रा दल व प्रदेश भर से आये साथी गांधी पार्क देहरादून में एकत्र हुये, वहाँ से जनगीतों तथा नारों के साथ समस्त यात्रा दल प्रैस क्लब देहरादून पहुँचा। वहाँ पहुचकर यह एक गोष्ठी में बदल गया।

जनगीतों के साथ दिन के प्रथम सत्र की शुरुआत हुई। पहले सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार राजीव लोचन शाह व वरिष्ठ गांधीवादी विचारक बीजू नेगी ने की तथा सभा का संचालन वरिष्ठ आंदोलनकारी तथा महिला मंच की संयोजिका कमला पंत ने किया।

इसके पश्चात् यात्रा दल में शामिल रहे उत्तराखण्ड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, गोपाल भाई व भुवन पाठक ने अपने यात्रा अनुभवों को साझा किया।

8 मई 2022 को हल्दानी से शुरू होकर तकरीबन 4500 किलोमीटर यात्रा पूरी करने के पश्चात् 15 जून को यात्रा देहरादून पहुँची। 15 जून तक लगातार देहरादून शहर के आसपास सद्भावना कार्यक्रम आयोजित होते रहे, जिनमें बैठकों के अलावा खाराखेत की यात्रा तथा देहरादून में अलगदृअलग स्थानों पर सद्भावना दौड़ का आयोजन किया गया। इन समस्त कार्यक्रमों में लगभग 200 से अधिक बैठकें, गोष्ठियाँ, जनसभाएँ, नुक्कड़ सभाएँ, सांस्कृतिक रैलियों का आयोजन किया गया। सद्भावना यात्रा के दौरान प्रत्यक्ष रूप से 10000 लोगों से संवाद स्थापित किया गया तथा 800 से अधिक साथियों ने विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में सहायता की।

जिन भी साथियों ने आवास, भोजन व बैठकों का आयोजन किया, उनको धन्यवाद ज्ञापित किया गया। यात्रा की योजना–प्रेरणा के लिए राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली का आभार व्यक्त किया गया, जिनकी सहायता के बिना इस महत्वपूर्ण यात्रा का संचालन संभव नहीं था।

वैचारिक रूप से यात्रा की योजना बनाने में सहायता के लिए पद्मश्री इतिहासकार डॉ शेखर पाठक, राजीव लोचन साह, पीसी तिवारी, सुरेश भाई, डॉक्टर रमेश पंत, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, दर्शना जोशी, सुंदर सिंह मेहरा, लक्ष्मण आर्य व राजीव गांधी फाउंडेशन के विजय महाजन व वरिष्ठ सद्भावना फेलो विजय प्रताप का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

यात्रा दल का नेतृत्व उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, रीता इस्लाम, गोपाल भाई, सर्वोदय कार्यकर्ता साहब सिंह सजवान, सुंदर सिंह बरोलिया, विजय महाजन, प्रो सोमनाथ घोष, परमानंद भट्ट, जीत सिंह सनवाल, लक्ष्मी सनवाल, प्रयाग भट्ट, रजनीश बिष्ट, रेवा बिष्ट, हिदायत आजमी, मुरारी गोस्वामी, दिनेश लाल, नरेंद्र कुमार, प्रेम बहुखंडी, पीसी तिवारी, किरण आर्य, अमीनुल रहमान, प्रभात उप्रेती, दिनेश कुंजवाल, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, डॉक्टर रमेश पंत, सुंदर सिंह मेहरा आदि शामिल रहे।

जिन प्रमुख साथियों ने यात्रा पड़ावों पर सहयोग किया उनमें सर्व श्री डॉक्टर अजय पुंडीर, नैन सिंह डगवाल, रूपेश कुमार, प्रभात ध्यानी, मनमोहन अग्रवाल, राजीव लोचन साह, शेखर पाठक, अनिरुद्ध जडेजा, स्वाति मवाली, रमा बिष्ट, बचे सिंह बिष्ट, दिनेश कुंजवाल, अनिला पंत, चंद्रा पंत, महेश पुनेठा, महेंद्र रावत, भगवान रावत, राजेश उप्रेती, रेनू ठाकुर, जगत मतोलिया, नरेश द्विवेदी, अनिल कार्ले, कमलदीप रावत।

चर्चा की शुरुआत यात्रा दल का नेतृत्व कर रहे इस्लाम हुसैन ने की। उन्होंने कहा कि तमाम तरह की शंकाओं व डर के बावजूद यात्रा सफल रही। यात्रा के दौरान हमने यात्रा के उदेश्य को बेहिचक निडरता से लोगों के सामने रखा। भाईचारा व कौमी एकता के गीत व नारे लगाये।

लोगों ने इस पहल का खुलकर स्वागत किया। उसमें शामिल हुये, गोपाल भाई ने कहा कि यात्रा के दौरान एक बात समझ में आई कि समाज का खुद से अपनी समस्याओं के समाधान की पहलें कमजोर होती जा रही है। खासकर जिस भी काम का जिम्मा राष्ट्रध राज्य ने लिया उसको लेकर एक खास तरह की बैचेनी और उदासीनता समाज में दिखाई देती है। जिन त्योहारों व उत्सवों को हम हर्ष व खुशी व्यक्त करने के लिए मनाते थे, अब वो त्योहार गुस्सा और घृणा व्यक्त करने के माध्यम बन गये हैं। और जो धर्म राजसत्ता से टकराकर पैदा हुये थे वही धर्म अब राजसत्ता की चाटुकारिता में व्यस्त हो गये हैं।

यात्रा दल संयोजक भुवन पाठक ने उन समस्याओं की ओर इशारा किया जो आज भी समाज में दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि समाज में आपसी संवाद व संपर्क घटा है। धर्म–जाति, भौगोलिक बोली–भाषा के आधार पर छोटे–छोटे समूह बन गये हैं। जिनका आपसी सम्पर्क व संवाद लगातार घट रहा है। हम बिना एक दूसरे का सच जाने ही विरोध करने लगे हैं। राज्य निर्माण के 22 वर्षों बाद भी प्रदेश के गाँव बदहाल स्थिति में हैं तथा गाँवों को लेकर सटीक व व्यवहारिक योजनाओं का अभाव है।

चर्चा में पीसी तिवारी ने यात्रा को प्रांसगिक बताते हुए, देश में जिस तरह से हिंसा व नफरत को लेकर आम सहमति बनाने का प्रयास किया जा रहा है, के खिलाफ उत्तराखंड में सबको एकजुटता से आगे बढ़ने पर बल दिया। पी सी तिवारी ने कहा जातीय– धर्म सद्भाव को बनाये रखने के लिये दीर्घकालीन योजनाओं पर काम किया जाना चाहिये। अगले वक्ता के तौर पर विजय महाजन ने यात्रा के मूल विचार व राजीव गांधी फाउंडेशन की भूमिका पर बात की तथा सद्भावना से आगे बढ़कर समाधान तक कैसे पहुँचे दृ इस सवाल को महत्वपूर्ण बताया। विजय प्रताप ने सांप्रदायिकता के बढ़ते जहर को रोकने के लिये सामूहिक रणनीति व छोटे – छोटे सार्थक प्रयासों पर बल दिया। अध्यक्षीय भाषण में बीजू नेगी व राजीव लोचन शाह जी ने पुनरू यात्रा के अनुभवों को भविष्य की रणनीति के लिये महत्वपूर्ण बताया तथा इस क्रम को लगातार जारी रखने की अनिवार्यता पर बल दिया।

चर्चा में पीसी तिवारी ने यात्रा को प्रांसगिक बताते हुए, देश में जिस तरह से हिंसा व नफरत को लेकर आम सहमति बनाने का प्रयास किया जा रहा है, के खिलाफ उत्तराखंड में सबको एकजुटता से आगे बढ़ने पर बल दिया। पी सी तिवारी ने कहा जातीय– धर्म सद्भाव को बनाये रखने के लिये दीर्घकालीन योजनाओं पर काम किया जाना चाहिये। अगले वक्ता के तौर पर विजय महाजन ने यात्रा के मूल विचार व राजीव गांधी फाउंडेशन की भूमिका पर बात की तथा सद्भावना से आगे बढ़कर समाधान तक कैसे पहुँचे दृ इस सवाल को महत्वपूर्ण बताया। विजय प्रताप ने सांप्रदायिकता के बढ़ते जहर को रोकने के लिये सामूहिक रणनीति व छोटेदृछोटे सार्थक प्रयासों पर बल दिया। अध्यक्षीय भाषण में बीजू नेगी व राजीव लोचन शाह जी ने पुनरू यात्रा के अनुभवों को भविष्य की रणनीति के लिये महत्वपूर्ण बताया तथा इस क्रम को लगातार जारी रखने की अनिवार्यता पर बल दिया।

द्वितीय सत्र

भोजन के पश्चात् द्वितीय सत्र प्रारंभ हुआ जिसमें सभी साथियों ने अपना परिचय तथा वैचारिक पक्ष रखा। इस सत्र कि अध्यक्षता कमला पंत एवं पीसी तिवारी ने की तथा संचालन भुवन पाठक ने किया। चर्चा की शुरुआत में पीसी तिवारी ने आज के माहौल में सक्षम राजनैतिक हस्तक्षेप कि आवश्यकता पर बल दिया।

विजय प्रताप ने राष्ट्रीय माहौल पर बात करते हुये कहा कि समाज में विभिन्न धर्मो– जाति समूहों के बीच आपसी संवाद व संबंधों पर चौतरफा हमला हो रहा है। आज के माहौल में आपसी संवाद लगातार बना रहे यह आवश्यक है।

रामनगर से आए साथी प्रभात ध्यानी ने सांप्रदायिकता के खिलाफ सशक्त राजनैतिक हस्तक्षेप की वकालत की। उन्होंने कहा कि आज की परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए समस्त वैचारिक संगठनों को एकजुट होना पड़ेगा, गांधीवादी विचार व संगठनों की जिम्मेदारी अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है।

टिहरी से आए देवेन्द्र बहुगुणा ने सर्वोदय विचार व आंदोलन को पुनः संगठित करने पर जोर दिया तथा कहा कि राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान तथा उसके बाद मीरा बहन व सरला बहन की वैचारिक व सांगठनिक परंपरा का एकजुट होना चाहिए। देहरादून के साथी प्रेम बहुखण्डी ने उत्तराखंड खासकर पर्वतीय क्षेत्रों के लिए नये विकास के माडल पर सोचने की आवश्यकता पर जोर दिया तथा नेहरू माडल पर पुनर्विचार की आवश्यकता पर जोर दिया।

सल्ट से आए साथी शंकर ने ग्रामीण समुदाय में व्याप्त निराशा व हताशा को तोड़ने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण समाज जिसमें महिलाओं की अधिकता है। उनके साथ संवाद किया जाना चाहिए। उनकी आजीविका को सशक्त बनाना चाहिए।

राजीव लोचन शाह जी ने आजादी के 75 वर्षों बाद के पहाड़ की पीड़ा को संबोधित किया। पिछले 8–10 सालों में माहौल इतना बदल गया है कि चारों ओर भय–निराशा व मानसिक गुलामी दिखाई देती है। ऐसे माहौल में जब कहीं भी आशा व उत्साह नहीं दिखाई दे रहा था तब सद्भावना यात्रा ने संभावना के नये द्वार खोले हैं।

देहरादून के साथी त्रिलोचन भट्ट ने सद्भावना यात्रा के बाद की संभावनाओं व चुनौतियों पर प्रकाश डाला। इस सत्र के अध्यक्षीय भाषण में कमला पंत जी ने सद्भावना यात्रा जैसे कार्यक्रमों की प्रासंगिकता का महत्वपूर्ण माना उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में जिला व विकास खंड स्तर पर सद्भावना समितियों का गठन किया जाना चाहिए। ताकि यात्रा के दौरान उत्साहित साथियों को जोड़ा जा सके। उन्होंने देहरादून में चल रहे शांति दल के काम को भी सभा में प्रस्तुत किया। अंत में आज की बैठक के समापन की घोषणा की।

प्रेस नोट – 20 जून 2022

हम सदभावना के साथी पिछले 45 दिनों से उत्तराखंड में 4500 किलोमीटर की यात्रा के पश्चात आज यहां एकत्र हुए हैं। इन 45 दिनों में 200 से अधिक कार्यक्रम तथा विभिन्न स्थानों पर रात्रि प्रवास के दौरान तकरीबन 10,000 लोगों से हमारा संपर्क हुआ, इस दौरान लगभग 800 से अधिक साथियों ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर यात्रा में सहयोग किया, यात्रा के दौरान आयोजित अधिकांश कार्यक्रमों में सभा संबंधी संसाधनों जैसे कुर्सियां, मेज, माइक सहित जलपान की व्यवस्था स्थानीय आयोजक साथियों के द्वारा की गई, यात्रा दल के भोजन व आवास का इंतजाम भी अधिकांश स्थानों पर स्थानीय सहयोगियों द्वारा किया गया।

8 मई को स्वर्गीय कुंवर प्रसून के जन्मदिन के अवसर पर हल्द्वानी से शुरू होकर यात्रा उधम सिंह नगर की तराई से होते हुए पहाड़ों की मुख्य घाटियों, ऊंचे पहाड़ों, सुंदर जंगलों, नदियों, गाड़ो, गावों, बाजारों, नगरों को पार करते हुए 40 दिन बाद देहरादून पहुंची, विगत 5 दिनों में देहरादून नगर में आसपास विभिन्न संगठनों, साथियों ने कार्यक्रमों का आयोजन किया।

इस यात्रा के दौरान हम सदभावना के साथियों को अभूतपूर्व अनुभवों से गुजरने का मौका मिला, कुली बेगार आंदोलन के 100 सालों, आजादी के 75 सालों तथा अलग राज्य के 22 वर्षों के दौरान जो परिवर्तन हुए या जो स्थितियां बनी है उनको जानने समझने का मौका मिला, जिन भी लोगों से हम मिले शुरुआती संकोच वह झिझक के बाद बुजुर्गों दृ महिलाओं, युवाओं ने अपनी राय वह बात खुलकर सामने रखी। इस यात्रा के दौरान जो भी बातें हमारे सामने आई उनको संसीदा रूप में आपके सामने प्रस्तुत करते है।

1. राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक सद्भाव भाईचारा व आपसी प्रेम के माहौल को बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है लेकिन स्थानीय स्तर पर इसकी अभिव्यक्ति उतनी सशक्त नहीं दिखाई दी, लोगों ने आज के माहौल को शांति व बेहतर मानवीय विकास के प्रतिकूल माना।

2. हमारे समाज में विभिन्न धार्मिक व जातीय समूहों के बीच आपसी संवाद के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। पलायन व मिलकर साथ में काम करने के अवसर घटने के कारण आपसी संवाद – बातचीत व सहकार लगाना कम हो रहा, इससे आसानी से एक दूसरे के बारे में गलत जानकारियों को सच मान लिया जा रहा है।

3. जातियों के बीच भेदभाव पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर जातीय आधार पर भेद–भाव घटा है।

4. समस्त यात्रा के दौरान यह बात सामने आई कि हम देवभूमि के साथ–साथ वनभूमि के लोग हैं हमारी खेती दृपशुपालन, खान–पान, फल फूल, दवा, दारू दैनिक उपयोग की बहुत सी वस्तुएं, आबोहवा, देवी देवता सब वनों से आते हैं।

5. आर्थिक तौर पर पहाड़ वह मैदान दोनों जगह गरीबी – पलायन और बेकारी लगातार बढ़ रही है।

6. पहाड़ में लगातार नया बंजर फैल रहा है।

7. पहाड़ प्लास्टिक तथा अन्य तरह के कचरे के ढेर में बदलता जा रहा है। ठोस कूड़ा निस्तारण की तकनीक व योजनाओं का अभाव है।

8. अनियंत्रित व नियोजित भवन निर्माण घातक श्रेणी तक असुरक्षित होता जा रहा है, नए बाजारों, कस्बों, नगरों के भौतिक विकास ने नदियों, खालो, गधेरो को अपनी चपेट में ले लिया, जो लगातार प्राकृतिक आपदाओं का कारण बन रहा है।

9. राज्य में सार्वजनिक निर्माण जैसे पंचायत घर, यात्री विश्राम गृह, सार्वजनिक शौचालय, पटवारी चौकी, एएनम सेंटर, प्राथमिक विद्यालय घटिया निर्माण व भ्रष्टाचार की भेंट चल रहे हैं और इस सवाल पर सार्वजनिक बहस या कार्यवाही नहीं हो रही है।

10. लगातार सिकुड़ती खेती के कारण जहां एक और भोजन के लिए निर्भरता बाजार पर बढ़ रही है वही खानपान में स्थानीयता व मौसम संबंधी भोजन कि प्रचुरता घट रही है।

11. बेहतर वन्यता व जैव विविधता वाले क्षेत्र लगातार पर्यटन व्यवसाय के लिए बेचेध्खरीदे जा रहे हैं, विशालकाय होटल निर्माण तथा जनसंख्या दबाव के चलते प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव उसके लिए संघर्ष बढ़ता जा रहा है।

12. राज्य के भीतर पलायन के कारण एक नई कस्बाई जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, जिसके कारण 10– 20 साल पहले तक पहाड़ का उत्पादक श्रम अब अनुत्पादक श्रम पर निर्भर समाज में बदल रहा है।

13. राज्य निर्माण के 22 वर्ष बाद भी हम अधिकांश गांवों तक स्थानीय स्वास्थ्य, बेहतर शिक्षा, आसान संचार सार्वजनिक यातायात, स्थाई व टिकाऊ रोजगार, साफ व पर्याप्त पेयजल एवं सिंचाई सुविधाएं स्थापित नहीं कर पाए हैं।

14. हिमालय की भौगोलिक एवं भूगर्भीय संरचना के अनुरूप विकास का मॉडल नहीं बन पाए।

15. विशाल मझोले बांध व सुरंग आधारित जल विद्युत परियोजनाएं बनने का क्रम लगातार जारी है उससे होने वाला पर्यावरणीय तथा सामाजिक विनाश जारी है।टिहरी बांध से विस्थापित गांव आज तक उचित विस्थापन का संघर्ष कर रहे हैं।

16. जंगली जानवर व निराश्रित पालतू पशु प्रदेश निवासियों के जीवन व खेती के लिए खतरा बनते जा रहे हैं, लोगों का जीवन व खेती जानवरों के हमले का शिकार होते जा रही है।

17. जंगलों की आग, गिरता जलस्तर, सूखते जल स्रोत, घटती जैव विविधता, असमय बारिश या सुखा जनजीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है।

18. कोविड–19 के बाद घर वापसी कर चुके नौजवानों या मानव श्रम के सामने रोजगार का संकट बना हुआ है, तमाम सरकारी योजनाओं का लाभ लोगों तक नहीं पहुंचा।

19. शिक्षा खासकर सरकारी शिक्षा के अवसर बड़े हैं बालिका शिक्षा के स्तर में आशातीत सुधार हुआ है। बेहतर होते सरकारी विद्यालयों में रचनात्मक अध्यापकों की बहुत सारी कहानियां और उदाहरण हमको देखने सुनने को मिले।

20. महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ी है महिलाओं के समूह, सहकारी समूह और संगठन आर्थिक उत्पादन के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति लगातार बढ़ा रही हैं।

21. स्वतंत्र व अध्ययनशील युवाओं के समूह अपने आस–पास में बदलाव के प्रयास कर रहे हैं, सामाजिक शोध व हस्तक्षेप की पहलो का नेतृत्व कर रहे हैं लेकिन यह अधिकांश प्रयोग शहरों के आस–पास केंद्रित हैं।

22. पहाड़ जो सदियों से सहभागिता व सामूहिकता के मूल्यों से एक दूसरे की सहायता तथा मिलकर अपने बंदोबस्त करते थे अब सरकार पर निर्भर या अनुदान पर निर्भर होते जा रहे हैं, जिन सार्वजनिक सुविधाओं को हमारे पुरखों ने अपने कौशल, सामूहिक श्रम, नेतृत्व से खड़ा किया अब उनकी देखभाल या पुनर्निर्माण के लिए सरकारी योजनाओं की ओर देख रहे हैं।स्वावलंबी समाज धीरे–धीरे याचक समाज में तब्दील हो रहा है।

23. अनेक स्थानों पर लोग अपने प्राकृतिक संसाधनों, पंचायती वनों, पानी, नदियों, धराटो की देखभाल करते दिखे।

हमारा समाज जिसका इतिहास व लोक गाथाएं अपने रचनात्मक निर्माण, शांति पूर्ण प्रतिरोध व सामूहिक संघर्षों व जनपक्षीय आवाजों से भरा है जहां विगत 100 वर्षों में जनपक्षीय नेतृत्व व कार्यकर्ताओं की समृद्ध परंपरा रही है वहां अब सामूहिक जनपक्षीय पहले खामोश होने लगी हैं।हम निर्माता या नेतृत्व करता समाज से श्रोता समाज में बदल रहे हैं गलत नीतियों, गलत सूचनाओं, भ्रामक प्रचार के प्रति हमारा रवैया पहले से ज्यादा उदासीन दिखता है।

सदभावना यात्रा के दौरान हम अपने पूर्व घोषित कार्यक्रम का लगभग शत–प्रतिशत पालन कर पाये उन समस्त स्थानों पर जा पाये जहां जाने का निर्णय किया था। हमने कोशिश की इस यात्रा के दौरान हम अपनी पूर्व निर्धारित मान्यताओं और शिक्षाओं के स्थान पर समाज में प्रचलित अवधारणाओं तथा मान्यताओं को समझ पाए।समाज के सही और गलत को तय करने के विवेक के पास पहुंचे, एक तटस्थ अध्ययन करता के रूप में इस यात्रा को कर पाए।अपने उन तमाम जननायकओं के कार्यक्षेत्र व लोग शिक्षण के क्षेत्र में जा पाए जहां उनके काम और विचार के बीज मौजूद हैं।

हमें हमारा समाज तमाम सामाजिक सवालों तथा समस्याओं के बावजूद नए व पुराने ज्ञान व परंपरा के बीच समन्वय बनाता दिखा, चर्चा में भागीदारी करता दिखा, कई चीजों को लेकर आशंकित तो भविष्य को लेकर आशान्वित दिखा, हमारी महान लोकतांत्रिक परंपराओं, भाईचारा, आपसी प्रेम, सामाजिक शांति, व सद्भाव के स्वरों के साथ सहमति जताता दिखा, मुख्य रूप से -

1. सामाजिक सद्भाव के लिए संवाद व सहकार
2. आर्थिक सद्भाव के लिए संवाद व सहकार
3. पर्यावरणीय सद्भाव के लिए संवाद व सहकार

अतः उपरोक्त के लिए व्यापक अवसर व संभावनाएं यात्रा दल को दिखाई देती हैं।

I.5 २१ जून २०२२ – मसीही ध्यान केन्द्र (राजपुर) देहरादून

आज की बैठक का आयोजन सद्भावना के काम को भविष्य में जारी रखने के लिए योजना बनाने हेतु किया गया है। 20 जून 2022 को प्रेस क्लब देहरादून में आयोजित बैठक में सभी प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि भविष्य में सामाजिक व पर्यावरणीय सद्भाव के लिए लगातार संवाद जारी रहना चाहिए।

मसीही ध्यान केंद्र में आयोजित बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार राजीव लोचन शाह तथा सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष इस्लाम भाई ने संयुक्त रूप से की। सभा का संचालन भुवन पाठक ने किया।

सभा संचालक ने सभा से अनुरोध किया दृ उपस्थित साथी जो प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से पधारे हैं, आज केवल भविष्य के कार्यक्रमों का सुझाव देंगे ताकि कोई ठोस योजना बनाई जा सके। यदि उनके कोई सुझाव व प्रस्ताव हों या किसी व्यक्ति के नाम पर आपत्ति हो तो उसे भी सदन के सम्मुख रखा जा सकता है।

- कमला पंत ने इस पूरी प्रक्रिया को चौपाल या खुले मंच के रूप में जारी रखने पर जोर दिया। साथ ही कहा कि सभी कार्यक्रमों की स्वायत्तता बनी रहे इसके लिए सामूहिक तौर पर सद्भावना संवाद चलाये रखना होगा।

- बीजू नेगी ने कहा कि सोशल मीडिया पर घृणा के खिलाफ एक समूह का गठन किया जाए तथा –'हमारे पुरखे' कार्यक्रम के तहत स्थानीय स्तर पर भी सद्भावना कार्यक्रमों पर जोर दिया जाए।

- चेतना आन्दोलन के साथी शंकर गोपाल ने वर्किंग ग्रुप बनाकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

- अजय जोशी ने वैचारिक मिलन, निरंतर संवाद व यात्राओं के आयोजन को महत्वपूर्ण बताया।

- देवेन्द्र बहुगुणा जी ने स्वतंत्र व पूर्णकालिक कार्यकर्ता निर्माण तथा लगातार कोई कार्यक्रम जो बिना लागत व तामझाम के किये जा सकते हों, जैसे स्वधर्म प्रार्थनाय को नियमित करने व करवाने पर बल दिया।

- अर्चना बहुगुणा ने स्थानीय स्तर पर युवा शिविर तथा सद्भावना यात्राएँ आयोजित करने पर बल दिया तथा कहा कि रुद्रप्रयाग में सद्भावना यात्रा तथा सद्भावना शिविर की जिम्मेदारी हम लेते हैं।

- मनीष रावत ने बताया कि नए लोगों की पहचान कर उनको संवाद में कैसे शामिल करें। मनीष रावत ने सद्भावना संवाद को ग्राम स्तर पर ले जाने हेतु वहाँ कार्यरत सामाजिक ईकाइयाँ जैसे महिला मंगलदल, युवा मंगलदल व ग्राम समितियों को जोड़ने का प्रस्ताव रखा।

- प्रभात ध्यानी ने यात्राओं की जरूरत पर बल देते हुए बताया कि सांप्रदायिक तनाव पर हमारी क्या तैयारी होनी चाहिए। सद्भावना को बढ़ाने के लिए निजी स्तर पर सद्भावना खेलों का आयोजन किया जाए तथा इन आयोजनों में संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा जाए।

- डा वसुधा पंत ने कहा कि आगामी वर्षा काल में पूरे प्रदेश में सद्भावना वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया जाना चाहिए।

- चन्द्रा पंत ने कहा कि युवाओं के साथ युवा शिविर तथा जनगीत आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमो क आयोजन किया जाना चाहिए।

- रुपेश कुमार ने कहा कि सांस्कृतिक आंदोलन को आगे बढ़ाना अति आवश्यक है। किसी भी महत्वपूर्ण घटना पर फेक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाना भी अपने आप में महत्वपूर्ण कदम है।

- प्रेम बहुखण्डी ने युवाओं के साथ संवाद बनाने के लिए सोशल मीडिया को टूल के रूप में इस्तेमाल करने व उनकी भागीदारी बढ़ाने के बारे में योजना बनानी होगी।

- राजीव गांधी फाउंडेशन के श्री विजय महाजन ने कहा कि सद्भावना संवाद से आगे बढ़कर समाधान तक जाना चाहिए। संवाद के नए माध्यम सोशल मीडिया पर फोकस करना चाहिए। युवाओं को आकर्षित करने वाली विधाओं के बारे में सोचना तथा असहमतियों को सुनना भी चाहिए।

अपने अध्यक्षीय भाषण से पहले राजीव लोचन शाह ने इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिये एक संचालन समिति तथा कार्य समिति तय करने का प्रस्ताव सदन में रखा। इस प्रस्ताव के उत्तर में आम सहमति से तय किया गया कि 21 जून 2022 को उपस्थित सभी लोग तथा पूर्व में तय सद्भावना यात्रा समिति के लोग ''उत्तराखंड सद्भावना संयोजन समिति'' के सदस्य होंगे। तथा एक नौ लोगों की कार्यसमिति जो कि सद्भावना कर्यक्रमों का संचालन तथा निगरानी करेगी। तय की गई जिसमें निम्न नाम है :

1) सर्व श्री अजय सल्ट – सल्ट जिला अल्मोड़ा; 9411751625
2) डा वसुधा पंत – अल्मोड़ा; 9456722422
3) गोपाल भाई – बेरीनाग (पिथौरागढ़); 8923523957
4) शंकर गोपाल – देहरादून; 8923523959
5) अर्चना बहुगुणा – रुद्रप्रयाग; 9690413541
6) प्रेम बहुखण्डी – देहरादून; 9810881284
7) विनोद बढोनी – घनसाली, टिहरी; 9411734310
8) सुरेन्द्र थापा – सहसपुर, देहरादून; 8077882019
9) भुवन पाठक – गरुड़, बागेश्वर; 9456813288

यह समिति आगामी एक वर्ष तक उत्तराखण्ड में सद्भावना संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों तथा अभियानों के लिये जिम्मेदार होगी। इसके पश्चात् राजीव लोचन शाह जी ने सभा में वर्ष के लिये कार्यक्रमों मसोदा पेश किया।

1) सद्भावना समितियो का गठन दृ यात्रा के दौरान संपर्क में आये साथियों तथा आयोजन से जुड़े साथियों के साथ जिला स्तर, विकास खंड स्तर व नगर तथा ग्राम स्तर पर सद्भावना समितियों के गठन किया जायेगा।

2) सद्भावना सम्मेलन – आगामी वर्ष भर में प्रदेश में चार सद्भावना सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। इनका समय व स्थान कार्य समिति की बैठक में तय किया जायेगा।

3) सद्भावना यात्राएँ दृ स्थानीय स्तर पर तीन सद्भावना यात्राओं का आयोजन किया जायेगा

1– तराई विकास नगर से बनबसा की यात्रा
2– जनपद रुद्रप्रयाग व चमोली की यात्रा
3– चंपावत जनपद की यात्रा

4) इसके अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर अन्य प्रयासों तथा सद्भावना कार्यक्रमों के साथ सहभागिता।

इन प्रस्तावों को सर्वसम्मति से पारित किया गया तथा सभी साथियों ने इस पर सहमति भी व्यक्त की। तत्पश्चात् सभा अध्यक्ष श्री राजीव लोचन शाह तथा इस्लाम हुसैन जी ने कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

1.6 हल्द्वानी से देहरादून तकय सफल रही राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा

सर्वोदय जगत 1-15 जुलाई 22

हल्द्वानी से देहरादून तक; सफल रही राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा

उत्तराखंड का जनमानस अपने परम्परागत सद्भाव और भाईचारे की मिसाल खुद है। उत्तराखंड में सम्पन्न हुई 40 दिन की राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा में यह तथ्य बार बार देखने को मिला। सभी शांति चाहते हैं और अहिंसा पर टिके रहना उनका स्वभाविक गुण है। यह यात्रा सद्भावना के प्रसार के अपने उद्देश्य में सफल रही.

8 मई को उत्तराखंड में हल्द्वानी से आरंभ होकर सद्भावना यात्रा का 20 जून को देहरादून में समापन हुआ। इस यात्रा का मार्ग इस प्रकार निर्धारित किया गया कि उत्तराखंड के सभी जिलों और अंचलों में सद्भावना का संदेश पहुंचाया जा सके। यात्रा के दौरान पूरे समय सांस्कृतिक जुलूस निकाले गए, जिनका जबरदस्त प्रभाव स्थानीय जनता पर देखा गया। इस दौरान कुल 80 पड़ावों पर गोष्ठियां और नुक्कड़ सभाएं करते हुए यात्रा देहरादून पहुंची।

इस यात्रा ने जिस तरह राज्य के छोटे-छोटे कस्बों, गांवों, अंचलों, कस्बों, चोटियों और घाटियों को करीब 4500 किमी चल कर नापा है, वह यात्रा की सघनता को समझने के लिए काफ़ी है। इस बीच यात्रा का करीब 10 हजार लोगों से सम्पर्क हुआ, जिसमें करीब 800 लोग ऐसे थे, जिन्होंने यात्रा के दौरान कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय सहयोग किया।

यात्रा के दौरान उत्तराखंड के जिन जननायकों का ज़िक्र बार बार आया, उनमें वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली का नाम प्रमुख है. वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली ने जिस तरह पेशावर के किस्साख्वानी बाजार में निहत्थे आंदोलनकारी पठानों पर गोली चलाने से इंकार किया था, वह सच्चाई और साहस की अद्भुत मिसाल है।

उत्तराखंड का भूगोल, जलवायु ओर सांस्कृतिक विविधता हमें एकता का संदेश देती है. उत्तराखंड में करीब डेढ़ दर्जन भाषा और बोली बोलने वाले हैं, जो आपसी सद्भाव से रहते हैं। यात्रा में सामाजिक, जातिगत और धार्मिक मुद्दों पर जन सामान्य से बातचीत करके वर्तमान परिस्थितियों में समन्वय और सद्भाव बढ़ाने पर बल दिया गया।

यात्रा में असंगठित मजदूरों व महिलाओं की स्थिति, किशोर-किशोरियों व युवाओं के मुद्दे, निराश्रित महिला पुरुषों के अलावा सड़कों और जंगलों में घूमते हुए निराश्रित पशुओं की दुर्गति पर भी चिंता व्यक्त की गयी। पलायन से खाली होते गांवों, प्राकृतिक संसाधनों और पशुधन की हिफ़ाज़त जैसे मुद्दों और मौजूदा हालात पर भी विचार विमर्श हुआ।

जलवायु परिवर्तन के कारण प्रदेश में कृषि उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बंजर होते खेतों और बगीचों की जमीनों पर बनने वाले रिजोर्ट और बड़े बड़े निर्माणों से स्थानीय संरचना पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव की अपनी चिन्ताओं को लोगों ने यात्रीदल के साथ साझा किया। बागबानी, कृषि उत्पादन, फलोत्पादन, दुग्ध उत्पादन और स्वरोजगार के अच्छे प्रयोगों और अनुभवों को भी साझा किया गया।

यात्रा के दौरान सबसे प्रभावकारी नुक्कड़ सभाएं रहीं, जिनमें यात्रीदल ने विभिन्न विषयों पर आमजन से सम्भाषण किया। गोपाल भाई के जन गीतों से आरंभ होने वाली नुक्कड़ सभाओं में भुवन भट्ट, इस्लाम हुसैन और साहब सिंह सजवाण ने अपनी बात रखी. राज्य के आंदोलनकारी व जुझारू नेता पीसी तिवारी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सद्भावना के माहौल में ही राज्य का विकास हो सकता है। उत्तराखंड आंदोलनकारियों के लिए श्रद्धा का केन्द्र रहे गैरसैंण में राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा का स्वागत करते हुए जुझारू नेता कामरेड इंद्रेश मैखुरी ने सभी विभाजनकारी और साम्प्रदायिक शक्तियों का मुकाबला करने का आह्वान किया।

पद्मश्री बसंती बहन ने अपने हर सम्बोधन में जल, जंगल, जमीन की लूट और नशे के बढ़ते प्रचलन को देश और प्रदेश के लिए घातक बताया और इसे रोकने की अपील की। कोसी नदी घाटी में किए गए उनके कार्यों व अनुभवों को सुना और सराहा गया। स्कूलों में छात्र छात्राओं को इस बात से ख़ास ख़ुशी हुई कि उनके बीच पद्मश्री से सम्मानित बसंती बहन पहुंची हैं।

प्लास्टिक कचरे के खतरे पर भी चर्चा हुई, लोगों का कहना था कि कचरे के कारण पहाड़ के सौंदर्य और पर्यावरण पर संकट आ गया है. सरकार के पास इस समस्या को दूर करने के लिए न दृष्टि है और न ही इच्छा है। यात्रा के अन्तिम पड़ाव देहरादून के पास यात्री दल खारीखेत पहुंचा, जहां की खारी नदी में स्थानीय सत्याग्रहियों ने नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा था। यात्री दल ने वहां दांडी मार्च के सत्याग्रहियों को याद किया।

इस यात्रा में जो लोग सम्मिलित रहे, उनमें उत्तराखंड सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, यात्रा संयोजक भुवन पाठक, चिपको आंदोलनकारी साहिब सिंह सजवाण, पद्मश्री बसंती बहन, उत्तराखंड आंदोलनकारी पीसी तिवारी, सामाजिक मुद्दों पर मुखर व आंदोलनकारी प्रभाव ध्यानी, सर्वोदय मण्डल से रीता इस्लाम, सुरेन्द्र बरोलिया, नरेंद्र कुमार, राजीव गांधी फाउंडेशन से विजय महाजन, परमानंद भट्ट, हिदायत आज़मी, जीत सिंह, लक्ष्मी, प्रयाग भट्ट, रजनीश और रेवा अरुण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

सर्वोदय जगत डेस्क

Click here to watch full video on Rashtriya Sadbhavana Yatra, Uttarakhand- https://youtu.be/I4yJYP4hSms